International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

" 21 वीं सदी का हिंदी साहित्य ,समाज और वैश्वीकरण "

डॉ.प्रतिभा चौहान

अध्यक्षा हिंदी विभाग, पी.जी गवर्नमेंट कॉलेज,फरीदाबाद

साहित्य, समाज, संस्कृति और भाषा का परस्पर अटूट सम्बंध है क्यों कि समाज की जितनी प्रभावी अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से सम्भव है, उतनी किसी भी माध्यम से नहीं और भाषा की निरंतरता, प्रभावमयता साहित्य को प्रभावी बनाती है। साहित्य में युगीन समाज की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति, देशकाल व संस्कृति की युगीन प्रस्तुति, उसे विश्वसनीय, यथार्थपरक और जनसाहित्य बनाती है।

अगर हम भारतीय संस्कृति, समाज और साहित्य के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा की बात करें तो हम पाएंगे कि हिन्दी भाषा के साहित्य सृजन ने बदलते समय की चुनौतियों को स्वीकारते हुए समाज के हित में साहित्य की रचना की है।आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं- " हमारे व्यवहारिक और भावात्मक जीवन से जिस भाषा का सम्बन्ध सदा से चला आ रहा है, वह पहले जो कुछ भी कही जाती रही हो लेकिन वह आज की हिंदी ही है। आज की हिंदी ही कभी संस्कृत के रूप में, कभी प्राकृत और कभी अपभ्रंश के रूप में बहती रही है।" हिंदी भाषा ने अपने समय के युगीन यथार्थ को रचते हुए, तदयुगीन समाज की चित्तवृतियों का बखूबी वर्णन किया है और यही कारण है कि हिंदी भाषा में लगातार प्रवाहमयता ,जीवन्तता बनी हुई है। युगीन परिपेक्ष्य की बात करें तो आज वैश्वीकरण के दौर में भारतीय समाज में व्यापक स्तर पर परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आज वैश्वीकरण के कारण भारतीय समाज एक तरफ शैक्षिक, भौतिक, तकनीकी विकास के नये आयाम स्थापित कर रहा है तो दूसरी तरफ अनेक सामाजिक, वैश्विक चुनौतियां समक्ष खड़ी हैं ,एक तरफ पूरा विश्व एकीकृत हो कर ग्लोबल गाँव में बदल रहा है तो दूसरी तरफ इतनी अनभिज्ञता है कि नवीन फ्लैट संस्कृति में एक पड़ोसी, दूसरे पड़ोसी को नहीं जानता। वैश्वीकरण ,उदारीकरण की नीतियों और संचार तकनीक की उन्नति से अस्तित्व में आए वैश्विक गाँव में पूंजी का वृहद कारोबार है, चमचमाते मा◌ॅल व ऊंची- ऊंची सडकें हैं, रात भर का◌ॅल सेंटर में खटते युवाओं की टोली है, टी. एच/एल.वी की शर्ट पहने बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पोशीदा लोग हैं, सोशल मीडिया है, डिजिटल मीडिया है, लिव इन रिलेशनशिप है ,वैधानिक मान्यता प्राप्त होमोसेक्सुयल रिलेशनशिप की लंबी बहस है तो वहीं दूसरी तरफ आत्महत्याएँ करते किसान हैं,बेघर होकर अस्तित्व की तलाश करते संघर्षमय आदिवासी समूह हैं, दलित समाज की जातीय संघर्षशील दास्तान है, साक्षरता अभियान पर प्रश्न चिह्न लगाते होटलों, ढाबों, रेलवे-स्टेशनों पर काम करते बच्चे,जमीन अधिग्रहण से बेरोजगार किसान, कुंठा ग्रस्त मध्यम वर्ग, एकाकीपन से त्रस्त वृद्ध समाज और तीन तलाक की रोक के बाद भी घरेलु हिंसा से जूझता नारी समाज।हम देखते हैं कि वर्तमान सदी में भूमंडलीकरण, भौतिकवाद, बाज़ारवाद, आर्थिक लोलुपता, सोशल मीडिया और बढ़ती वर्ग विषमता ने समाज को पूरी तरह से अपनी जकड़न में ले रखा है और इस बदलते हुए वैश्वीकृत समाज की परिस्थितियों,प्रवृत्तियों और उत्थान- पतन का शब्दां◌ंकन हिंदी साहित्य में बखूबी हुआ है। हिंदी साहित्यकार बखूबी जानता है कि शब्द

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

की सत्ता तभी तक है जब तक वह अपने युग की प्रतिध्वनि है और इसलिए हिंदी साहित्य में 21 वीं सदी के वैश्वीकृत समाज की समस्याओं, चुनौतियों, नई सम्भावनाओं और मशीनी युग की भेंट चढ़ते संवेदनो को यथार्थमयी अभिव्यक्ति मिली है।

आज 21 वीं सदी में भारत एक तरफ भारत आर्थिक महाशक्ति बनने के कगार पर है वहीं दूसरी तरफ भूख,गरीबी, बढ़ती जनसंख्या, जल संकट,असंतुलित पर्यावरण ,बेरोजगारी, उपभोक्तावादी संस्कृति व दिशाहीन राजनीति से जूझ रहा है। हिंदी साहित्य समाज व देश की इन तमाम विसंगतियों, विद्रूपताओं का आकलन ही नहीं करता बल्कि विश्लेषित कर लोकतांत्रिक समाज की संकल्पना पर जोर देता है। 21 वीं सदी की सब से महत्वपूर्ण घटना उदारीकरण, भूमंडलीकरण से जहां देश ने आर्थिक, व्यापारिक, तकनीकी उन्नति पाई है वहीं समाज में वर्ग विषमता की खाई को ओर भी अधिक गहरा किया है,लोक संस्कृति को अस्तित्वविहीन बनाया है, प्रकृति के लगातार दोहन से पर्यावरण को असंतुलित किया है और इस के साथ ही आधुनिक जीवन शैली ने मनुष्य को यांत्रिक, संवेदनहीन बना दिया है। उदारीकरण, वैश्वीकरण की नीतियों से भारत में मुक्त व्यापार का प्रवेश हुआ जिसने पूंजी और व्यापार नामक दो लंबे हाथों व सोशल मीडिया और विज्ञापन नामक दो नशीली आंखों से संपूर्ण समाज को पंगु बना दिया है। आज हमारी शिक्षा, चिकित्सा, पर्व - त्यौहार, विवाह सब बाजार के अधीन हैं जो उत्पाद बेचने के साथ नई मान्यताएं, नए मूल्य जैसे अवसरवादिता ,स्वकेन्द्रीयता, अहमवादिता स्थापित कर रहा है। आज वैश्वीकरण ने भारत को उस ग्लोबल वर्ल्ड में ला कर खडा कर दिया जिस में कोका कोला, पेप्सी, एप्पल फोन, टीचर्स फेयर एंड लवली ,जियो सिम की पंहुच दूर दराज तक के गाँवों तक है वहीं उन गांवों में दूर दराज तक एक अच्छा डॉक्टर ढूंढने पर नहीं मिलता, मुश्किल से एक-आधा प्राइमरी स्कूल, हाई स्कूल मिलता है,यानि आज हमारी जरूरतें हम नहीं, बाजार तय कर रहा है। हिंदी साहित्यकारों ने उपन्यास, कविता, कहानियों के माध्यम से वैश्वीकरण के दौर में सामाजिक जीवन में बाजार की बढ़ती पैठ पर चिंता व्यक्त की है। कवि हरि मृदुल ,राजेश जोशी, अंजना संधीर ,भरत दीप,अनीता वर्मा, मंगलेश डबराल आदि कवियों ने अपनी युगीन कविताओं के माध्यम से बताया है कि किस तरह वैश्वीकरण के दौर में भारतीय समाज में उपभोक्तावादी,मुनाफा केंद्रित प्रवृति बढ़ रही है जिस के कारण नवीन मान्यताएं स्थापित हो रही हैं। कवि हरि मृदुल की कविता चादर इस स्थिति को बखूबी उजागर करती है–

"विज्ञापन में दिखी झक सफेद चादर
वाशिंग मशीन से अभी-अभी धुली हुई
थोड़ी देर तक तो समझ में न आया
प्रचार किस का,
चादर का
वाशिंग मशीन का
डिटर्जेंट पाऊडर का
कि उस अठारह साल की लड़की का

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जो वस्तुओं की फेहरिस्त में अघोषित
तौर पर
पूरी तरह शामिल थी।" (1)

इसी तरह कवि भरत दीप लिखते हैं–

बताता है टी.वी विज्ञापन
जहां पानी नहीं बिजली नहीं
पर नेटवर्क तो है और
मूलभूत जरूरतों पर
लगा रहा प्रश्न चिन्ह।

आज भूमंडलीकरण ने संपूर्ण समाज,भू-भाग,वन, वायु,जल तथा मानव तक को उत्पाद बना लिया है ,जो निरंतर बेचे जा रहे हैं और इन्हें बेचने के लिए बाजार हमारे सामाजिक ढांचे में स्थान बना कर, हमारे सामाजिक संबंधों, नैतिक मूल्यों ,संस्कृति, धर्म, पर्व, त्यौहार व भावनाओं तक को भुना कर उत्पाद बिक्री के लिए धड़ल्ले से प्रयोग कर रहा है। वैश्वीकरण के हथियार के रूप में विज्ञापन स्वप्निल संसार दिखाता है और मनुष्य की विचार शक्ति को पंगु कर देता है और फिर मनुष्य बाजार में उपलब्ध हर एक चीज़ को पा लेना ,भोगना चाहता है जिस के लिए वह बैंक से लोन पे लोन लेकर,भौतिक सुखों का, ताश का महल खडा करता जा रहा है। कवि आत्मा रंजन लिखते हैं-

चमक का कमाल है सारा
चमक की व्याख्या का
कमाल ही कमाल
इस बाजार समय में
सब लाज़वाब
चकाचक, झका-झक। (3)

डॉ. कृष्ण दत्त पालीवाल अपने लेख "दीपावली पर मंडराते बादल"में उपभोक्तावादी संस्कृति को उजागर करते हुए लिखते हैं- "विश्वग्राम की बाजारवादी नीति ने दीपावली पर कब्जा कर लिया है और यह कब्जा इतनी चतुराई से किया है कि दीपावली ग्लैमरस रूप में बदल गई है जिस का ग्लैमर एक स्टेटस सिम्बल बन गया है।"(4) **वैश्वीकरण की देन है कि मां की सारी ममता जॉनसन एन्ड जॉनसन में समा गई है, भाई-बहन का राखी का त्यौहार तो मानो कैडबरी की मिठास पे ही टिका है,सारा अली खान की वीवो सेल्फी के बिना तो जैसे प्यार ही अधूरा है और दिमाग की बत्ती जलानी है तो मेंटोज खानी ही होगी । हिंदी साहित्य का रचनाकार वैश्वीकरण की इस चाल को पकड़ ,समाज को चेताता है। कवि निलय उपाध्याय लिखते हैं -**

वे बनाएंगे महंगे सामान,हम नहीं खरीदेंगे।
वे तय करेंगे सदी का रास्ता, हम नहीं चलेंगे।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मोहक विज्ञापनों का असर नहीं होगा हम पर।(5)

हिन्दी साहित्य का युगीन कवि अपनी कहानियों, कविताओं, उपन्यासों के द्वारा दर्शाता है कि वैश्वीकरण के युग में, 21 वीं सदी में एक नवीन समाज निस्सृत हुआ है जो बहुराष्ट्रीय निगमों में मशीन की तरह कमाते- कमाते, मानवीय संवेदनाओं से रहित यांत्रिकता की जिंदगी जी रहा है। हालांकि आर्थिक तौर पर यह समाज सुदृढ़ है,बिसलेरी- किनले का पानी पीता है, रेवन के चश्में लगाता है,विशेष कम्पनी के टूथपेस्ट से पेस्ट करता है, हिंग्लिश-इंग्लिश बोलता है,अलग-अलग तरह की चाय पी कर कड़क रहता है,लेकिन ये सब आर्थिक संसाधन जुटाते हुए वह प्रेम,त्याग,करुणा,क्षमा जैसे मूल्यों की तिलांजलि देता जा रहा है और परिणामस्वरुप एक नया संवेदनहीन समाज निर्मित हो रहा है जिसे एकाकीपन,परिवार विघटन,सोशल मीडिया लत, संवादशून्यता मानसिक रूप से खोखला कर रही है।अंजना संधीर लिखती हैं–

कोई किसी के रास्ते नहीं आता
सब चलते रहते हैं बेज़ान
कृत्रिम भाषा बोलते हैं
सब को डॉलर से तौलते हैं
बूढ़े किसी पार्क की बेंच पर
अकेले सामाजिक सुरक्षा फडं से
मिल रही पेंशन से
पेप्सी खरीद अकेले डूबे रहते हैं
मदर्स डे,फादर्स डे की साल भर
राह देखते हैं।"(6)

स्वयं प्रकाश का उपन्यास "ईंधन",नायक रोहित के माध्यम से 21 वीं सदी के उत्तर आधुनिक वैश्वीकृत समाज की कुंठा दर्शाता है, क्षमा शर्मा का उपन्यास "मोबाइल",मधु धवन का उपन्यास "साइबर माँ",सूरज प्रकाश का उपन्यास "नाॅट इक्वल टू लव",ऐसे उपन्यास हैं जो 21 वीं सदी के वैश्वीकृत समाज की चुनौतियों से अवगत कराते हैं। वैश्वीकरण से आय वृद्धि तो अवश्य हुई है लेकिन एक विशेष वर्ग की और इस से आर्थिक विषमता की खाई ओर भी गहरी हो गई है।देश की जनता का एक बड़ा हिस्सा दिन प्रतिदिन की आवश्यकताओं से जूझ रहा है। "ईंधन" उपन्यास में देखिए- "धीरे-धीरे मैं डरने लगी, घर में कोई चीज़ खत्म होती तो बताने में डरती। क्या? आटा खत्म हो गया, अभी तो पिसवाया था,घी भी खत्म? करती क्या हो, थोड़ा कम लगाया करो और जूतों की पोलिश तो छोड़ ही दो।"(7) 21 वीं सदी के नए वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मुक्त अर्थव्यवस्था,व्यक्तिवाद,बढ़ती प्रतिस्पर्धा,आर्थिक लोलुपता ने ज्ञान,नैतिकता और शिक्षा को भी बिकाऊ बना दिया है। आज शिक्षा बाजार है, शिक्षा प्राप्त युवा उत्पाद हैं जो कि नेचुरल रिसोर्स, सोशल रिसोर्स, इकोनॉमिक रिसोर्स की तरह मात्र ह्यूमन रिसोर्स बनकर रह गए हैं। कवि बद्रीनारायण कविता 'शब्दपदीयम" में पूंजीवाद व निजीकरण पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"चाहे कोई भी हो हम आप या कबीर
बौद्धिक लेखक फकीर
हम चार में बिकेंगे
पर दो ही पैसा पाएंगे।"(8)

अनीता वर्मा लिखती हैं कि इस निजीकरण, पूंजीवाद के युग में प्रेम, संवेदना, भावना सब कुछ बिक्री उत्पाद के रूप में है-

"कुछ दिनों बाद शायद
बनाएं जाएं विज्ञापन
खरीदिए एक पूरा आदमी
भाव प्रेम और संवेदना से भरपूर।"(9)

भूमंडलीकरण,अब भूमंडीकरण हो चुका है और इस भूमंडी में हिंदी भाषा के साथ-साथ अनेक क्षेत्रीय भाषाएं बाजार ,मीडिया और फिल्म उद्योग में अपने पैर पसार रही हैं और प्रोडक्ट की मांग व बिक्री के अनुसार हिन्दी के साथ ही बाजार की भाषा बनने पर आमादा हैं। जहां एक तरफ वैश्वीकरण ने हिंदी भाषा की प्रासंगिकता को बनाए रखते हुए, विश्व सन्दर्भों में इसे महत्व प्रदान किया है वहीं दूसरी तरफ हिन्दी की भाषायी शुद्धता और साँस्कृतिक अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाया है। हिंदी के शब्द रूपों,वाक्य रचनाओं में अंग्रेजी का धड़ल्ले से प्रयोग एक तरफ तो अँग्रेजी के वर्चस्व को स्थापित कर रहा है और दूसरी तरफ क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों के हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने से भाषा की नई सम्भावनाएं नजर आ रही हैं। भाषायी दुनिया में नई टकराहटों से कुछ पुराना ध्वस्त हो रहा है तो कुछ नए शब्द रूप भी अस्तित्व में आ रहे हैं –"चुस्की जो ले मनवा ,फनटास्टिक हो जाए मनवा", जब लैला को करना हो इम्प्रेस तो खाओ मेन्टोफ्रेश"। राजेश जोशी भाषा पर बाजारवाद और वैश्वीकरण की पकड़ को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं–

"बाजार पहले ही चुरा चुका था
हमारी जेब में रखे सिक्कों की खनक
और अब वह सौदा कर रहा है हमारी भाषा
का।"(10)

आज 21 वीं सदी में,वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दो जातीय ध्रुव-स्त्री और पुरुष अपने-अपने जातीय संघर्षों,आशाओं,महत्वाकांक्षाओं के साथ जीवन संग्राम में हैं। भारतीय समाज पित्तृसत्तात्मक रहा है जिस के परिणामस्वरूप स्त्री को जातीय शोषण, भावनात्मक अत्याचार, मानवीय असमानता जैसे दुखों को भोगना पड़ा और इन्हीं कारणों से वह स्वत: पुकार उठती थी–" अब तो किए है मैला ,बस अब न कीजिए,अगरे जन्म मोहे बिटिया ना कीजौ।" युगीन हिंदी साहित्य में स्त्रीवादी चिंतन ने व्यापक स्तर पर स्त्रियों के दुख व मर्म को समझा है और आधुनिक महानगरों में स्त्रियों की ज्वलंत समस्याओं जैसे देह शोषण,घरेलु हिंसा, लिंग असमानता,कुपोषण,अशिक्षा,शारीरिक उत्पीड़न, मानसिक उत्पीड़न आदि पर गहन संवेदना व्यक्त की है। प्रभा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

खेतान, रोहिणी अग्रवाल,अर्चना शर्मा, साधना आर्य,चित्रा मुदगल,कात्यायनी,शशिकला राय, क्षमा शर्मा, तस्लीमा नसरीन,मनीषा कुलश्रेष्ठा ऐसी लेखिकाएं हैं जो स्त्री के पक्ष में दृढ़ता से खड़ी हैं और जिन्होंने नए वैश्विक परिवेश में स्त्री संघर्ष को अंकित करते हुए स्त्री की अर्थिक,मानसिक, सामाजिक गुलामी पर सवाल उठाए हैं। लेखिका निवेदिता मेनन,साधना आर्य अपने लेखन में स्त्रियों के प्रति जेंडर और सेक्सुअल आधार पर होने वाले भेदभावों की व्याख्या करती हैं कि महिलाओं की अधीनता को स्त्री-पुरुष के बीच जैविक फर्क़ के आधार पर सही नहीं ठहराया जा सकता और ना ही तमाम उत्पीड़नों को कुदरती कहकर जायज ठहरा सकते हैं। लेखिका नमिता सिंह,कृष्णा अग्निहोत्री युगीन जेंडरवादी समाज में स्त्री के आत्म सम्मान को महत्तवपूर्ण मानती हैं। चित्रा मुदगल अपने उपन्यास "एक जमीन अपनी",व "आवां" में स्त्री विमर्श को देह विमर्श से आकलित करने की प्रक्रिया का विरोध करती हैं और स्त्री संघर्ष की जमीन को तलाशती हैं। क्षमा शर्मा अपने उपन्यास "मोबाइल" में स्त्री संघर्षों को उकेरते हुए,स्त्री की आर्थिक आजादी का प्रश्न उठाती हैं। स्त्री समस्याओं, कुंठाओं, तनावों, सामाजिक मजबूरियों को केवल स्त्री लेखिका ही नहीं उठाती बल्कि स्त्री लेखिकाओं के साथ-साथ लीलाधर जगूड़ी,मंगलेश डबराल,बसंत त्रिपाठी जैसे युगीन लेखकों ने भी 21 वीं सदी की स्त्री की धार्मिकता, सामाजिक संकीर्णता व आधुनिकता को उकेरा है। बसंत त्रिपाठी कविता "अधेड़ स्त्री" में लिखते हैं–

"वह अधेड़ स्त्री
कृष्ण की अनन्य उपासिका
वृन्दावन जरूर जाती
राधे-राधे करती, वृन्दावन घूमती
अब यह बात ओर है कि
अपनी बेटी की प्रेम पाती पकड़ते ही
उसे पिछले साल गर्म सलाखों से दाग
दिया।"(11)

इतना ही नहीं चित्रा मुदगल, क्षमा शर्मा अपने साहित्य में दर्शित करती हैं कि भौतिकता की अंधी दौड़ ने प्रेम, ममता, सौंदर्य की मूर्ति स्त्री को आकर्षण व दिखावटी वस्तु बना कर रख दिया है।कवयित्री अनीता वर्मा लिखती हैं—

" पहले स्त्री बाजार नहीं जाती थी
फैली थी समूचे घर में
अब स्त्री के कदम बाजार में हैं
सामान कोई भी हो
बेची जाती है हमेशा स्त्री ही।"(12)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैश्वीकरण के समय में हिंदी की लेखिकाओं ने स्त्री- पुरुष असमानता, उत्तर आधुनिक स्त्री की कुंठा, सर्वहारा स्त्री, लिंग भेद की शिकार स्त्री से जुड़े विभिन्न पहलुओं को बखूबी विश्लेषित किया है। इस समाज में औरत को किस- किस नजरिये से देखा जाता है, इस का वर्णन कवयित्री अनामिका करती हैं-

"भोगा गया हम को
बहुत दूर के रिश्तेदारों के
दुख की तरह!
एक दिन हमने कहा
हम भी इंसान हैं-
हमें कायदे से पढ़ो एक-एक अक्षर
जैसे पढ़ा होगा बी.ए.के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन।
सुनो हमें अनहद की तरह
और समझो ऐसे जैसे समझी जाती है
नई- नई सीखी हुई भाषा!
इतना सुनना था कि अधर में लटकती हुई
एक अदृश्य टहनी से टिड्डियां उड़ीं
और रंगीन अफवाहें
चीखती हुई चीं-चीं
दुश्चरित्र महिलाएँ ,दुश्चरित्र महिलाएँ।" (13)

वैश्वीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय निगमों की मुनाफाखोरी ने व्यक्ति,जमीन,जल,वायु सभी को विनाश के कगार पर ला दिया है। राजू शर्मा का उपन्यास "हलफनामा", चित्रा मुदगल का "एक जमीन अपनी" जल संकट की चुनौती से अवगत कराते हुए, बहुराष्ट्रीय कंपनियों की चाल का पर्दाफाश करते हैं। रामदरश मिश्र लिखते हैं-

तेजाब सा खलबला रहा है
नदियों का पानी
जल गए मौसमों के रंग
और एक दूसरे में समा गए
आदमी एक प्यासा शोर बन के रह गया।(14)

हिंदी साहित्य के कवि धर्मवीर शर्मा, वीरेंद्र मिश्र, रामदरश मिश्र, भरत दीप ,कविता भाटिया ने अपनी कविताओं में उपनिवेशवादी,उपभोक्तावादी प्रवृति के कारण जल संकट, वायु प्रदूषण, पर्यावरण असंतुलन को महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में उकेरा है।कवि वीरेंद्र मिश्र लिखते हैं–

" वो अपने अश्रु में आकाश को भिगोएगी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नदी के अंग कटेंगे तो नदी रोएगी

नदी को हंसने दो

नदी को बहने दो।"(15)

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी साहित्य में दलित समाज की अन्तर्निहित राजनीतिक, सामाजिक चेतना को अभिव्यक्ति मिली है। दलित चिंतन एक तरफ तो इस सामाजिक सरंचना का विरोध करता है और दूसरी तरफ अपनी जातीय पहचान को संघर्ष का मूल विषय बनाए रखता है। ओम प्रकाश बाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन',श्योराज बैचेन की 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर', डॉ. धर्मवीर की 'मेरी पत्नी और भेड़िया',सुशीला टांकभौरे की 'शिकंजे का दर्द' ऐसी आत्मकथाएं हैं जिन में दिखाया है कि उत्तर आधुनिक समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग अशिक्षा, अज्ञानता, अंधविश्वास,अपमान, छुआछूत जैसे अंधेरों में भटक रहा है। रेणुका गुप्ता, सुशीला टांकभौरे ऐसी लेखिकाएं हैं जिन्होंने दलित स्त्री के दर्द को उकेरा है कि किस तरह आज भी दलित स्त्री पुरुष वर्चस्व और जाति हीनता की दोहरी यंत्रणा से गुजर रही है।

इस तरह हम देखते हैं कि हिंदी साहित्य वैश्वीकरण के दौर में समाज के समक्ष खड़ी चुनौतियों से लड रहा है, युगीन सामाजिक सरोकारों,विसंगतियों, पर्यावरणीय चुनौतियों व भाषायी टकराहटों को साहित्य में उतार रहा है और वैश्वीकरण के दौर में समाज की बदलती परिस्थितियों को बखूबी चित्रांकित कर रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ-

हरि मृदुल ,**चयनित कविताएं**,**पृष्ठ**-39,**न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन**, 2022 **संस्करण।**
Kavita Kosh,http://kavitakosh.org
आत्मा रंजन,' '**पगडण्डियाँ गवाह हैं**',**पृष्ठ**-70,**अंतिका प्रकाशन**, 2011 **संस्करण।**
कृष्ण दत्त पालीवाल,**आधुनिक हिंदी साहित्य**:**सामाजिक साँस्कृतिक विमर्श**,**सस्ता साहित्य प्रकाशन**, 2022 **संस्करण।**
निलय उपाध्याय, '**कटौती**',**पृष्ठ**-51,**राधा कृष्ण प्रकाशन**, 2000 **संस्करण।**
Kavita Kosh,http://kavitakosh.org
स्वयं प्रकाश, **उपन्यास**-'**ईंधन**',**पृष्ठ**-201,**वाणी प्रकाशन**, 2004 **संस्करण।**
Hindwi,https://www.hindwi.org
अनीता वर्मा, '**एक जन्म में सब**',**पृष्ठ**-39,**राजकमल प्रकाशन**,2003 **संस्करण।**
राजेश जोशी , Kavita Kosh,http://kavitakosh.org
बसंत त्रिपाठी, Kavita Kosh,http://kavitakosh.org
अनीता वर्मा,'**एक जन्म में. सब**',**पृष्ठ**-25,**राजकमल प्रकाशन**, 2003 **संस्करण।**
अनामिका,Hindwi,https://www.hindwi.org
रामदरश मिश्र, Kavita Kosh,http://kavitakosh.org
वीरेंद्र मिश्र, Kavita Kosh,http://kavitakosh.org

.